ISSN-2320-4494
RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC
Impact Factor : 2.7286

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

December Special Issue : II - 2022

ARTS | COMMERCE
SCIENCE | AGRICULTURE
EDUCATION | MANAGEMENT
MEDICAL | ENGINEERING & IT I LAW
PHARMACY | PHYSICAL EDUCATION
SOCIAL SCIENCE | JOURNALISM
MUSIC | LIBRARY SCIENCE |

www.powerofknowledge.co.in
E-mail : powerofknowledge3@gmail.com
Editor
Prof.Dr.Sadashiv H. Sarkate

Scanned with OKEN Scanner

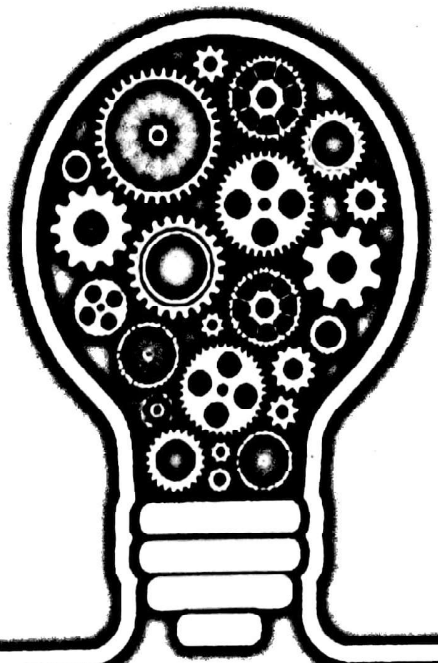

POWER OF KNOWLEDGE

ISSN 2320449-4

THIS QUARTERLY " POWER OF KNOWLEDGE " IS PRINTED BY
PUBLISHED BY & OWNER BY SAW.SARKATE LATA SADASHIV
& PRINTED AT KRANTI PUBLICATION, GEORAI,
DIST BEED - 431 127 (M.S.)
EDITOR : Professor Dr.SARKATE SADASHIV HARIBHAU

RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC

Scanned with OKEN Scanner

RNI No.MAHAUL03008/13/1/2012-TC ISSN 2320-4494

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

December Special Issue II 2022
Editorial Officer
Kranti Publication
Georai Dist.Beed
Beed -431 127
Contact : 7875827115
E-mail : Sarkatelata@gmail.com

Published By :
Mrs. Lata Sadashiv Sarkate

Price : Rs. 300/-

Advisory :-

Hon. Dr. Sudhir Gavhane
Vice Chancellor M.G.M.U. Aurangabad & Ex.Vice Chancellor Y.C.M.U. Nasik & Professor of Mass Communication & Jornalism Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Hon. Dr.Pratibha Aher
Management Council Member
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Hon. Dr. Madan Shivaji
Ex-Management Council Member
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Hon. Dr. Bhagwat Katare
Ex. Director, BCUD
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Hon. Dr. Sanjay Nawale
Head of Dept. Hindi
Dr.B.A.M.U.Aurangbad

Hon. Dr. Paralikar Kanchan
Principal, Mahila College, Georai

Hon. Dr. Ashok Mohekar
Ex-Magement Council Member
Dean, Faculty of Science,
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

EDITOR

Dr.Sadashiv Haribhau Sarkate
Senate Member, Ex-Chairman-BOS in Marathi, Dr.B.A.M.U.Aurangabad
Associate Professor & Head, Dept. of Marathi, JBSPM's
Arts & Science College, Shivajinagar, Gadhi Tq. Georai Dist. Beed.

EDITOR BOARD

Dr. Mala Nurilmala
Dept.of Aquatic Product Technology
Faculty of Fisheries and Marine Sciences
Bogor Agricultural University, Indonsia

Dr. Bharat Handibag
Ex-Dean, Faculty of Arts
Dr.B.A.M.U.Aurangabad

Dr. Dhere R.M.
Dept.of Zoology
Swa.Sawarkar Mahavidyala, Beed

Dr. Vasant Biradar
Princial, Mahatma Phule
Mahavidyalaya,Ahmedpur,Dist.Latur

Dr.Sudhakar Shendge
Professor of Hindi
Dr.B.A.M.U.Aurangbad

Dr.D.P. Takale
Professor & Head
Dept. of Economics
L.B.S.College, Partur Dist.Jalna

Dr.Ganesh Adgaonkar
Kalika Devi ,Collage
Shirur Kasar Dist.Beed

Dr.Aparna Ashtaputre
Dept. of Psychology,
Dr.B.A.M.U.Aurangbad

Dr. Vitthal S. Jadhav
Dept. of Pub.Administration,
Kalikadevi College, Shirur (K.), Dist.Beed

Dr. Kadam Mangal S.
PG Dept.of Zoology
Yeshwant Mahavidayala, Nanded

Dr. Rajesh Karpe
Management Council Member
Dr.B.A.M.U.Aurangabad

Dr. Taher H. Pathan
Aligad Muslim university, Aligad (U.P.)

Dr.S.D.Talekar
Professor, Dept. of Commerce
L.B.S.College, Partnr Dist Jalna

Dr.S.R.Takale
Principal, Sant Sawatamali, College,
Phulambri Dist. Aurangabad'

Dr.Bharat Khandare
Principal, Swami Vivekanand College, Mantha.
Dist. Jalna

Dr.Vishwas Kadam
Principal, JBSPM's Arts & Science College,
Gadhi Tq.Georai, Dist. Beed

Dr.Fulchand Salampure
Management Council Member
Dr.B.A.M.U.Aurangabad

PEER REVIEW / REFERECS

Dr.Shahaji Gaikwad
Ex-Chairman, BOS in English
Dr.B.A.M.U.Aurangabad

Dr.Vishwas Patil
Radha Nagari College,Radha Nagari, Dist. Kolhapur

Dr. Dilip Khairnar
Professor, Sociology
Deogiri College, Aurangabad

Dr. Santos Chavan
Shivchhatrapati College,
Pachod, Dist. Aurangbad

Dr. Shivaji Yadhav
Shivchhatrapati College,
Pachod, Dist. Aurangbad

Dr. Laxmikant Shinde
Assit.Professor
JES College, Jalna

MANGING EDITORS

Mr. Ramesh Ringne
Prof. Bapu Gholshe
Mr. Shivaji Kakade
Dr. Shakur Shaikh Husain
Mr. Vinod Kirdak
Dr. Datta Tangalwad
Mr. Kalandar Pathan
Dr. Suhas Morale
Dr. Baliram Katare
Assit.Prof.Mohan Kalkute
Dr. Adgaonkar Ganesh
Dr. Santosh Chavan
Dr. Rajkumar Yallawad

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्र.
1	The Predicament of Dalit Women in 21st Century Reflected in the Poems of Meena Kandasamy	Mr. Mangesh Subhash Mohod	1-5
2	Portrayal of Women in Sudha Murthy's Short Stories	Dr. Meghraj N Pawar	6-10
3	Role of 'Father Figure' in Dalit Autobiographies	Nawadkar Datta Narayan	11-15
4	A Study of New Trends and Female Dalit Writings	Dr. Savita Prabhakar Sadawarte	16-19
5	Recent Trends in English Language Teaching	Mrs. Shilpa V. Rathod	20-24
6	Uncovering Gender Concerns Through Selected Works Of American Literature	Veeraj Solanke	25-28
7	A Comparative Study of English and Marathi Pronunciation	Arun Malhari Jadhav.	29-32
8	Probing Modernism Through The Selected Works Of T.S Eliot	Veeraj Solanke	33-35
9	इक्कीसवीं शताब्दी के साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा. डॉ. विवेक घनशाम घोबाळे	36-39
10	कनुप्रिया में स्त्री विमर्श	प्रा.डॉ.बडचकर एस.ए. प्रा.प्रकाश बन्सीधर खुळे	40-43
11	स्त्री विमर्श का बुलंद एवं आश्वासक स्वर : अलका सरावगी कृत 'शेष कादंबरी' उपन्यास	प्रा.डॉ.संजय जाधव	44-51
12	हिंदी दलित कविताः संवेदना और सरोकार	प्रा. संतोष नागरे	52-54
13	हिंदी कहानियों मेंचित्रित दिव्यांग विमर्श	डॉ. युवराज राजाराम मुळये	55-58
14	21 वी शताब्दी के हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा.डॉ.बळीराम व्ही. राख	59-61
15	नारीवादी आंदोलन एवं विचारों का महत्व	डॉ.न.पु.काळे	62-66
16	दलित विमर्श स्त्री और समाज के संदर्भ में	प्रा.डा.अर्चना दिनेश परदेशी	67-71
17	मोहनदास नैमिशराय की 'आवाजे' कहानी में दलित चेतना	प्रा.डॉ.जी.बी.उषमवार	72-74
18	''विज्ञानकथा साहित्य मे पर्यावरण विमर्श''	मोरे औदुंबर बबनराव प्रो. डॉ. भाऊसाहेब. आर. नले	75-77
19	'धार उपन्यास में आदिवासींयों का संघर्ष'	डॉ. मंत्री रामधन आडे प्रा.राठोड स्विनल रघुनाथ	78-82
20	'मुक्तिपर्व' उपन्यास में दलित विमर्श	सौ. रोहिणी गुरूलिंग खंदारे	83-87
21	२१ वी शताब्दी के साहित्य मे महानगरीय विमर्श	डॉ.भाऊसाहेब नळे मंगल रामदास नेहरकर	88-90
22	आदिवासी कविताओं में चित्रित जीवन संघर्ष एवं स्त्री अस्मिता	डॉ. तोडाकुर एल.पी.	91-95
23	आदिवासी विमर्श की परंपराएं	डॉ. परमेश्वर जिजाराव काकडे	96-101
24	'२१ वीं सदी की महिला आत्मकथा में स्त्री विमर्श'	सुरेखा दत्तराव शिंदे	102-104
25	२१ वी सदी के कथा साहित्य में चित्रित आर्थिक समस्या से तणावग्रस्त नारी	सिमा दिलीपराव पाटील	105-109
26	समकालीन हिंदी कविता में आदिवासी विमर्श	डॉ.अनिसबेग रज्जाक बेग मिर्झा	110-115

Scanned with OKEN Scanner

"विज्ञानकथा साहित्य में पर्यावरण विमर्श"

मोरे औदुंबर बबनराव
शोधार्थी- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ औरंगाबाद.

प्रो. डॉ. भाऊसाहेब. आर. नले
शोध मार्गदर्शक: हिंदी विभाग
सुंदरराव सोलके महाविद्यालय माजलगांव.

भूमिका:

'विकास' शब्द का अर्थ सुख-समृद्धि की ओर,शोषण से मुक्ति की ओर जानेवाला मार्ग हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी एक दूसरे के पूरक है और जीवन को बेहतर बनाने के लिए इसका उपयोग करते हैं। उसे हम विकास कहते हैं। मानव ने अपना जीवन सुखमय किया,अपना विकास किया लेकिन सही मायने में मानव का विकास हुआ है क्या? यह शोचनीय बात है। जैसे-जैसे मानव अपने आपको प्रगत समझता जा रहा है, वैसे-वैसे वह 'एक बार उपयोग करो और फेंक दो' इस भौतिकवादी संस्कृति का गुलाम बनता जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप हम आज पर्यावरण की गंभीर समस्या का सामना कर रहे हैं। जिसके चलते प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी, भोजन की बर्बादी,भूमि की स्थिरता की चिंता किए बिना खेती की अस्थिर विधि, मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव, महिलाओं का शोषण, बिगड़ता प्राकृतिक संतुलन हमारे सामने यह प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

वैज्ञानिक आविष्कार और नई खोजों ने मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डाला हैं। इक्कीसवीं सदी और इस सदी की शुरुआती दौर में उल्लेखनीय वैज्ञानिक प्रगति हुई है। आइंस्टाइन के सापेक्षवाद से लेकर आज हवाई जहाज बने,अंतरिक्ष यात्रा संभव हुई, चांद पर मानव के कदम पड़े,सुदूर ग्रहों तक मानव यान पहुंच गए,परखनली शिशु पैदा हुए,भूख से मुक्ति के लिए नई किस्मों से अन्न क्रांति हुई और मानव की दुनिया में मशीनी मानव उर्फ रोबोट का आगमन हुआ। इससे मानव जीवन और मानवीय समाज में जितनी उथल-पुथल सौ- डेढ़ सौ साल में हुई है, उससे पर्यावरण पर बहुत आघात पहुंचा हैं। बढ़ते वैज्ञानिक प्रगति से मानव सुख-सुविधा के इतने आदी होते जा रहे हैं कि उन्हें इस बात का अंदाजा ही नहीं है कि इससे पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। सड़कों के लिए ना जाने कितने पेड़ काट दिए जा रहे हैं। एयरकंडीशनरों,फ्रिज और गाड़ियों के धुओ से निकलने वाली गैसों से न केवल वायुमंडल दूषित हो रहा है बल्कि ओजोन परत पर भी इसका असर पड़ रहा है। बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग से संपूर्ण मानव जाति खतरे में दिखाई दे रही है ।भूमंडलीकरण,उदारीकरण के चलते पर्यावरण असंतुलन सबसे ज्यादा बढ़ गया है। इस संदर्भ में वी.एन.जन्मेजय लिखते हैं कि,

'आधुनिक भौतिकवादी संस्कृति और सभ्यता के विकास ने देश की संपदा में वृद्धि की है। औद्योगीकरण,नगरीकरण, यांत्रिक प्रगति के साथ विशालकाय मिल,फैक्ट्री,कारखाने स्थापित किए हैं। कृषि में विज्ञान का प्रवेश हुआ वैज्ञानिक खेती करने के कार्य में वृद्धि हुई इन सब ने मिलकर प्रकृति के पर्यावरण को नष्ट कर दिया।'[1] इसमें संदेह नहीं है कि मानव की बढ़ती भोगवादी प्रवृत्ति ने विश्व को इस संकट के करीब लाकर खड़ा कर दिया है। इसी भोगवादी प्रवृत्ति के चलते मानव अपना नैतिक अधपतन

Scanned with OKEN Scanner

खोते जा रहा है।इस संदर्भ में विज्ञानकथाकार देवेंद्र मेवाड़ी कहते हैं,'प्रगति की भी एक सीमा होती है महोदय प्रगति के साथ-साथ विवेक भी उतना ही आवश्यक होता है।'[2]

मानव का विवेक जागृत रहेगा तभी वह पर्यावरणीय समस्या को रोक सकेगा।औद्योगिक प्रगति के साथ ही मानव जीवन में विज्ञान की भूमिका बढ़ गई है। वर्तमान जीवन पर इसकी छाप अंकित है।यह भी सत्य है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के चलते मानव के क्रियाकलाप,व्यवहार और आपसी संबंध में परिवर्तन दिखाई देते हैं, इसी परिवर्तन की देन है विज्ञानकथा। इस संदर्भ में देवेंद्र मेवाड़ी का कहना है कि, 'विज्ञानकथा साहित्य की वह विधा है जिसके माध्यम से लेखक मानव जीवन पर वैज्ञानिक खोजों, तकनीकी प्रगति,भावी घटनाओं और सामाजिक परिवर्तन के संभावित प्रभाव को दर्शाता है। यह भविष्य में झाकता है और अपनी लेखनी से भविष्य की तस्वीर खींचता है। अपनी कल्पना और वैज्ञानिक तत्वों के ताने- बाने से संभावनाओं का संसार बुनता है कैसी होगी कल की दुनिया?मानव का भविष्य क्या है? विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास कल मनुष्य को क्या देगा? क्या मानव सुदूर अंतरिक्ष के ग्रह नक्षत्र में जा बसेगा? या जनसंख्या विस्फोट से वह आकाल और भुखमरी में निरीह होकर अपना ही सर्वनाश होते देखेगा?क्या वह मशीनों रोबोटों और कंप्यूटरों के हाथों खेलूंगा? या धरती के गर्भ अथवा सागरों के पेंदी में रहने लगेंगा? या अपने ही आविष्कारों से विध्वस करके अपने ही सभ्यता को नेस्तनाबूद कर इसके अवशेषों पर अपनी नई दुनिया बसाएगा? क्या मादा भ्रूण को नष्ट करते-करते कल केवल पुरुषों का समाज रह जाएगा? कैसी होंगी कल की दुनिया?'[3]

पर्यावरण यह प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है। हमारे चारों तरफ व्याप्त होता है। पर्यावरण हमारे जीवन का मूल आधार हैं। हमें सांस लेने के लिए हवा, पीने के लिए जल,रहने के लिए भूमि प्रदान करता है।लेकिन मानव प्राकृतिक पर्यावरण में अपने स्वार्थ के लिए परिवर्तन करता है। उसमें मानवीय पर्यावरण का निर्माण किया है। इसका परिणाम जल,वायु और मृदा की स्वच्छता में गिरावट दर्ज की जा रही है।जल समस्या इतनी बिकट होती जा रही है कि आंकड़ों के अनुसार चालीस प्रतिशत जनसंख्या के पास कम से कम स्वच्छता वाला पर्याप्त पेयजल उपलब्ध नहीं है। जल संकट की प्रमुख वजह जंगलों का निरंतर कटते चले जाना। परिणाम स्वरूप पेड़, पौधों में कमी आई हैं। इस संदर्भ में संजय जायसवाल 'संजय' विज्ञानकथा 'भविष्य यात्रा' जल की समस्या को केंद्र में रखती है' 'बेटा,दुनिया में जितना पानी था उसे तुम्हारी युग के लोगों ने बर्बाद कर दिया। अब पृथ्वी पर पानी की एक बूंद भी नहीं बची है। जिसे प्यास बुझानी होती वह हाइड्रोजन का डबल डोज और ऑक्सीजन का सिंगल डोड यानी H_2O ले सकता है।'[4] आने वाले समय में जल समस्या गंभीर रूप धारण कर सकती हैं इसलिए हमें जल का सही उपयोग करना चाहिए।जिस तरह हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे, उसे देखकर लगता है कि वह दिन दूर नहीं, जब समस्त मानवता असमय ही इतिहास बन जाएंगी। इस विकास के मोह में हम इतने अंधे हो जा रहे हैं कि हम हमारे आने वाली पीढ़ी की हमें कोई चिंता ही नहीं है। जिस प्रगति से हम जंगल साफ कर रहे उसी प्रगति से पर्यावरण और हमारा आने वाला भविष्य हम खतरे में डाल रहे हैं।पृथ्वी पर घटते जा रहे जंगलों के कारण विश्व भर में जलवायु समस्या का उग्र रूप हमारे सामने आ रहा है। बढ़ती जलवायु समस्या से

Scanned with OKEN Scanner

ग्रीनहाउस गैस, भूमि के उपयोग में परिवर्तन, वर्षा के मौसम में बदलाव, समुद्र जल में वृद्धि, वन्यजीव प्रजाति का नुकसान, रोगों का प्रसार और आर्थिक नुकसान, जंगलों में आग ऐसी बहुत सारी समस्या मानव समाज के सामने दिखाई दे रही है।यह दिन दूर नहीं जब सब लोग इतिहास बन जाएंगे। इस बारे में 'अतीत में एकदिन' इस विज्ञान कथा में हमारी आंखें खोल देने वाला सच सामने आता है, 'सब इतिहास बन गया है प्रोफेसर पिछले पांच सौ वर्षों में ना जाने कितने नासमझ लोगों ने कितने पेड़, पौधों को काट डाला। एक- एक पेड़ के साथ उसकी आगे आने वाली पीढ़ियां खत्म हो गई। परिणाम आपके सामने है। प्रोफेसर हमें यह कभी भूलना नहीं चाहिए कि एक पेड़ सिर्फ पेड़ नहीं होता वह भविष्य का एक पूरा जंगल होता है" आज हम इसी भविष्य को खत्म करते जा रहे है। मानवीय जीवन प्रकृति के अस्तित्व पर टिका हुआ है।प्रकृति का संरक्षण मानवीय प्रयासों पर टिका हुआ है। वैज्ञानिकों ने प्रकृति और मानव के बीच संतुलन को समझने के लिए अनेक अनुसंधान किये है। जब तक मानवीय गतिविधियां प्रकृति साथ संतुलन बनाए रखेंगी, मानवीय जीवन उतना ही सुरक्षित रहेगा। इनी पर्यावरणीय मुद्दों को विज्ञानकथा साहित्य की माध्यम से समाज के सामने लाया गया है।साथ ही विकास के अन्य मॉडलों की खोज करनी होगी तभी मानव का अस्तित्व कायम रह सकेगा।

निष्कर्ष-

जीवन और मृत्यु की लड़ाई एक बुनियादी जरूरत है वैसे ही आज मानव अस्तित्व की लड़ाई समय की जरूरत बन गई है। आज पृथ्वी के अस्तित्व के बारे में सवाल उठाए जाते हैं। पर्यावरणवादी और वैज्ञानिक इस पर शोध कर रहे हैं।आज देश ही नही बल्कि विश्व पर्यावरण की समस्या से जूझ रहा है। यानी पंचमहाभूत खतरे में है।शाश्वत विकास के लिए प्रयास किए जाने चाहिए और लोगों के मन में 'विनाश नहीं, विकास चाहिए' की जड़ें जमाने चाहिए।

संदर्भ-

1. सुभाष शर्मा-पर्यावरण और विकास,सूचना और प्रसारण मंत्रालय,नई दिल्ली-11002, प्रथम संस्करण 2017. पृ.सं.45.
2. देवेंद्र मेवाड़ी- सभ्यता की खोज -भविष्य विज्ञानकथा संग्रह,नॅशनल पब्लिकेश हाऊस , नई दिल्ली -11002,प्रथम संस्करण -1996 पृ.सं.33.
3. देवेंद्र मेवाड़ी-कोख- नॅशनल पब्लिकेशन हाउस,अंसारीरोड,दरियागंज,नईदिल्ली-11002,प्रथम संस्करण,1998.पृ.सं.4.
4. संजय जायसवाल 'संजय'- भविष्य यात्रा- विज्ञानकथा कोश खण्ख-5, सं.संतोष चौबे, आईसेक्ट प्रकाशन,भोपाल-462016, प्रथम संस्करण-2022, पृ.स.93.
5. देवेंद्र मेवाड़ी-अतीत में एकदिन - भविष्य विज्ञानकथा संग्रह, नॅशनल पब्लिकेशन हाउस अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-11002 प्रथम संस्करण 1998.पृ.सं.71.

◈◈◈

Scanned with OKEN Scanner

21 वी शताब्दी के साहित्य मे महानगरीय विमर्श

डॉ.भाऊसाहेब नळे
मार्गदर्शक, हिंदी विभाग,
सुंदरराव सोळंके महा. ता.माजलगाव जि.बीड

मंगल रामदास नेहरकर
शोध छात्र, हिंदी विभाग
सुंदरराव सोळंके महा.ता माजलगाव जि.बीड

प्रस्तावना :

महानगर शब्द 'महा' और 'नगर' इन दो शब्द के योग से बना है। 'महा' का अर्थ 'बडा' और 'नगर' का अर्थ है 'गाव' या कस्बे आदी से बडी मनुष्य की वह बस्ती जिसमे अनेक जातीयो और पेशे के लोग रहते है। सामान्यता जहाँ अधिक लोक रहते है, जहाँ लाखो लोगो की सुनो सुनोयोजीतता होती है, भौतिक सुख सुविधा सहज रूप मे उपलब्ध हो जाती है उसे महानगर कहा जाता है। हमारे देश मे दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, मद्रास जैसे शहर महानगर कहे जाते है। डॉ. सीमा गुप्ता महानगर की परिभाषा कुछ इस प्रकार अभिहित करती है 'वे नगर जो अपने विकास के राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पूर्ण रूप से प्रणाम स्थापित कर लेते है महानगर की संज्ञा से अभिहित किये जाते है।

प्रत्यक्ष रूप से महानगर मे प्रगती के साधन दिखते है परंतु अप्रत्यक्ष रूप से ये प्रगती के साधन महानगरीय जीवन के लिए अभिशाप से कम नही है। महानगरीय जीवन एवं परिवेश की बेरोजगारी आवस समस्या, प्रदूषण, भीड, महंगाई, गंदगी, बेकारी, भ्रष्टाचार, यातायात, अपराधो करण, आधुनिकता एवं पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव आदी समस्याओ शहरो के मनुष्यो का जीवन संघर्ष भरा होता है। साथ हो अनेक पारिवारिक समस्याओ के चलते शहरी तणाव से ग्रस्त रहता है।

महानगरीय जीवन एवं परवेश : महानगरीय परिवेश मे मनुष्य जीवन मशीन यंत्र बनता जा रहा है। गाँव व मे जो आत्मीयता, संवेदना, अपनापन, स्नेह होता है। वही शहर तक आते आते अजनबी पण अकेलापण, घृणा, असंवेदना के रूप मे दृष्टिगत होता है। महानगरीय परिवेश के यांत्रिक जीवन, खोखले संबंध, अर्थ प्रधानता असंवेदनशील व्यवहार पर 'महानगरो के जीवन का सबसे बडा संकट लगता है की यंहाँ मनुष्य का धीरे धीरे अमानवीयकरण होता जा रहा है। दूर से देखने वाली महानगरी या चक्काचंद हर व्यक्ती को आकर्षित करती है। लेकिन इस आकर्षकता के पीछे छुपे अंधकार से वह बेखबर, अपनी परंपरा, परिवेश से कटकर रोजगार की तलाश मे शहर की आबादी बडी है, आबादी के बढने से विभिन्न समस्या भी महानगरो मे पैदा हुई है, जैसे बेरोजगारी, प्रदूषण, महंगाई, गंदगी यातायात भिड सबसे भयावह प्रदूषण जिनसे नगरीय जीवन के लोगो के स्वस्थ स्तर मे भारी गिरावट आई है। इन दुशप्रभाव के साथ ही महानगरीय परिवेश एवं हो रहे है विस्तार से संयुक्त परिवार तुट रहे है। हमारी सदियों की समस्या, संस्कृती, मूल्य आधी तार हुआ है। महानगरीय परिवेश से प्रभावित मानव जीवन के व्यवहार मे अजीब तरह की व्यावसायिकता लक्षित हो रही है। संबंध मे मधुरता का अभाव परिवारिक वैषम्य एकात्मता और आत्मियता के सूत्र पुरी तरह बिखरे हुए है। मा-बाप, पिता-पुत्री भाई- बहन के संबंध मे अनाब दुरिया आने से खून

Scanned with OKEN Scanner

के रिश्ते भी दरकने लगे है।

उपन्यास साहित्य और महानगरीय जीवन एव परिवेश: स्वाधीनता के पश्चात औद्योगीकरण का विभाजन एवं शिक्षा से उत्पन्न स्वच्छदता समकालीन उपन्यासकोरा के लिये चुनौती बनकर आयि। उन्होने साफ महसूस किया की महानगरो मे पश्चात अभ्याता के संक्रमण,अंधानंदुकरण, मशीनीकरण एवं फॅशन परिस्थितो के परिणाम स्वरूप अकेलेपण, घटन तूटण पिढी मे बढता अंतर शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार, महंगाई, राजनीति के बदलते मूल्य, जैसे कतिपय नये-नये प्रतिमान उभर रहे है। इन अप्रकृतिकवृती और असंसंस्कारीकता को वाचा देने का काम तत्कालीन साहित्यकरने अपने साहित्य मे किया। हिंदी कथा साहित्य की चित्रण रहा है। आधुनिक साहित्यकारो मे अपनी अनेक रचना मे महानगरी परिवेश एवं जीवन के यथार्थचित्र प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत आधुनिक साहित्यकार जिन्होंने हिंदी साहित्य मे अपने विभिन्न विधाओ के माध्यमसे महानगरीय परीवेश एव जीवन का चित्रन किया है। कमलेश्वर, मोहन राकेश, मंजुळ भगत, कृष्णा गोबती, राजेंद्र यादव, मालती जोशी, तुळशीदास, दामोदर खडसे आदीने अपने साहित्य द्वारा महानगरीय, आधुनिक जीवन के सभी दृष्टिकोनो को कथात्मक अभिव्यक्त प्रधान की है। इस साहित्यकारो ने अपने साहित्य की प्रस्तुती से अवगत कर दिया की उपर से जितना सहज, सरल आकर्षण दिखने वाला महानगरीय जीवन उतनाही कष्टप्रद और दुःखमय और संघर्ष भरा है। डॉ.दामोदर खडसे का प्रस्तुत उपन्यास के के कथे आज भी प्रसंगीक प्रतीत होते है। क्यूकी की इस उपन्यास मे महानगरी जीवन की आधुनिकता से प्रभावित उलझे, जटील सबंध, बेपनाह जिंदगी, तुटते दापत संबंध, लोगो की व्यस्तता पाश्चात्य शिक्षा एव सभ्यता का प्रभाव राजनैतिक डावपेच नैतिक मूल्य का पतन आवाज समस्या प्रदूषण बढती आबादी, महंगाई, मानवीय सबंध, स्वार्थ, कुंठा, सत्रास, अकेलेपण नारी स्वतंत्रता अर्थ प्रधानता जैसी महानगरी जीवन व परिवेश की विसंगती विसंगतियो विडंबनाओ को उपन्यास कार ने पूर्णतः अनुमती की सच्चाई से अभिव्यक्त किया है जो वर्तमान परिवेश के लिए भी प्रसंगीक है।

महानगरीय संवेदनहिनता : आजादी के बाद देश मे काफी परिवर्तन हुई है परन्तु इस परिवर्तन का प्रभाव सबसे अधिक महानगरो पडा है मानव मशीन बनकर रह गया जिन मे ना संवेदना है ना आत्मीयता और नही मानव की मानवता शेष है। नगरो की भीड और शोरगूल तथा अपनी व्यस्तता मे मनुष्य इतना संवेदनहिन हो गया है कि किसी भी मृत्यू या सहानुभूती की जगह उस दुःखी इंसान को ही एक संवेदनहिन पात्र का वक्तृत्व 'मोठा आदमी बुडबुडा था साल गाडी के नीचे आकार लोग तभी मरते है जब हमको जल्दी जाने का होता है'। आज का मशीनी मानवपूर्ण रूप से स्वकेंन्द्रित है उसे अपने काम से मतलब है अन्य किसी से कोई सरो कार नही रखना चाहता। अपने रास्ते मे आने वाली छोटी सी स्काबट भी बडी प्रतीत होती है। महानगरो की स्वार्थी प्रकृती ज्यादा से ज्यादा धन प्राप्ती व भागदोड तथा भोगवादी जिंदगी जीने की हवसने व्यक्ति को संवेदन शून्य बना दिया। उपन्यासकारणे संवेदनशून्य जड होते जाते मानव का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास मे यथास्थान किया है।

महानगरी आवास : आज शहरो मे जगह की समस्या सबसे बडी बनकर उभरी है जिसका कारण है लोगो

Scanned with OKEN Scanner

रोजगार की तलाश मे शहरो की और पलायन जिसके कारण महानगरो की आबादी बढ रही है परंतु उस अनुपात मे रहवास नही बढे परिणाम स्वरूप महानगरो मे साधारण जनुका आवास के लिए संघर्ष करन पडता है।

दांपत्य संबंध : भारतीय संस्कृती मे प्राचीन काल से दांपत्य जीवन पवित्र रहा है परंतु बदलते युग के साथ बदलते मूल्य का विघटन होते नैतिक मूल्य के कारण दांपत्य सबंधो मे संघर्ष की गती उग्र होती जा रही है। संस्कारो से किनारा करते हुए पत्नी पर अनपड का कलंक लगाते हुए पत्नी एव बच्चो से दूरी बना लेते है। शादी को वह बचपन की मूल बताकर अपने बच्चो और पत्नी से अलग रहना चाहते है क्योंकि उसके विचार से वह पडा लिखा आधुनिक सोच वाला व्यक्ति उसके विचार से वह पडा लिखा आधुनिक सोच वाला व्यक्ती ह और पत्नी पुरानी ख्यालो की अनपढ स्री है। इस प्रकार के विचार दांपत्य संबधो के तुटने का प्रमुख कारण बनते जा रहे है जो महानगरीय जीवन की आधुनिकता पर प्रश्नचिन्ह लागा रहे है। महानगरीय परिवेश एव नारी जीवन; महिलाओ ने संघटित होकर अपने अधिकारो की लढाई लडी जिससे आधुनिक महानगरी य नारी का नया रूप सामने आया है। आधुनिक शिक्षा के प्रचार प्रसार के फलस्वरूप नारी की मानसिकता व्यक्तित्व मे बदलाव एव नवीन दृष्टी विकसित हुई है वह सीडिओ के बंधन से मुक्त होकर अपना अलग अस्तित्व कायम करना चाहती है। नारी मे आत्मनिर्भरता आत्मविश्वास का निर्माण हुआ है मान्यता मान्यताओ परंपराओ महानगरीय परिवेश मे जीवनवेतीत करने वाली नारी प्राचीन नारिओ के तरह पुरुषो के उपयोग की जीवन प्रस्तुत रह कर स्वावलंबी बन गई है। वह परिस्थितीयो को अपने अनुकूल बदल कर जीने में विश्वास रखती है।

अध्यापकीय जीवन व शिक्षण संस्थाओ का भ्रष्टाचार : वैयक्तिक अनुभव एव जीवन दृष्टी के आधार पर महीप सिंह ने यह भी नही उपन्यास मे महानगरी य परिवेश मे अपनी पहचान खोते जाने वाले व्यक्ति की पीडा, संवेदनशून्यता, सबंधो का व्यावसायिकरण, असामाजिकता, मकान की समस्या, आर्थिक समस्या, महागाई, प्रदूषण, शिक्षण संस्थाओ का भ्रष्टाचार, अध्यापक वर्ग का संघर्ष स्वतंत्र विद्रोही नारी, तुटते पहलूओ का जिवंत चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची;

1. संक्षिप्त हिंदी राष्ट्रसागर, संपादक रामचंद्र वर्मा, पृष्ठ 516
2. समकालीन हिंदी उपन्यास महानगरीय बोध, डॉ.सीमा गुप्ता, पृष्ठ 07
3. कोणार्क की छाया, दामोदर खडसे भावना प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ 109
4. बादल राग दामोदर खडसे भावना प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2017

◈◈◈

Scanned with OKEN Scanner